

युप कथों डो
काई जात करे

अरुणधर

अरुण शर्मा
दूसरा संस्करण, 1992
मूल्य : सौ रुपये मात्र

प्रकाशक
वेनगाडं पब्लिकेशन
सूरतसिंह की कोठी, सोजती गेट
जोधपुर - 342 001
मुद्रण राजस्थान प्रिन्टर्स, सोजती गेट, जोधपुर - 342 001

CHUP KYNO HO KOI BAT KARO (Poems)
ARUN SHARMA
Price Rs. 100/- only

चाह से है चेतना
ऋग्वेद (१०, १२६, ४)

यह समर्पण उस दिल को
जो धड़कता है हमारे लिये ।

कुछ शब्द

- कविता, विशेषकर हिन्दी कविता का मस्कार रोमानी है। रम्यादमुद कल्पनाओं में कविता के प्रमाण प्राचीन काल से ही रहे जाते रहे हैं। मिथक मान के इस मस्कार से त्राणितयुग के मध्याह्न में भी कविता मुक्त नहीं हो पाई है। यथार्थबोध की कविताओं में भी इस तथ्य को भासानी में लक्षित किया जा सकता है। धरुण शर्मा का यह कविता-संग्रह इसी परम्परा का एक विकास चरण है।
- गंधी बोली हिन्दी-कविता जिन कालखंड में प्रोढ़ता प्राप्त कर गयी उसे छायायुग कहा गया। उम युग की काव्य-वस्तु में व्यक्तियता की प्रधानता रही ता शिल्प में "मैं शैली" की। किन्तु, विकास-क्रम में इन दोनों ही प्रवृत्तियों का इस काव्ययुग की मोमा स्वीकार कर स्वयं छायावादी कविता न ही 'युगांत' किया और पूरे उम युग का 'पुनर्मूल्यांकन' भी प्रस्तुत किया। फिर भी कवियों का एक वर्ग, इससे विपरीत, रोमानी कविता-मृष्टि को विकसित करता ही चला गया। मनोरजन प्रसादसिंह, धारणी, नवीन, नीरज घांडी की कविता परम्परा समानान्तर विकास पाती ही रही। यहाँ तक कि प्रमाणयुग के प्रतिष्ठापक कवि भ्रंजयजी को भी छायावाद के त्वभावशेष का कवि या नव्य छायावादी कवि कहकर सम्बोधित किया गया। धरुण शर्मा का यह कविता-संग्रह इसी परम्परा को आगे बढ़ाने वाली एक समस्त एक ललित कला-मृष्टि है।
- धरुण शर्मा स्थापित कवि है। उनका भ्रंजयजी कविता-संग्रह ह्यात है। भ्रंजयजी के प्रतिष्ठित कवि है वे। हिन्दी में उनका यह पहला कविता-संग्रह है। भावना प्रधान एक संवेदनात्मक य कवितायें निश्चय ही मुन्दर है, प्रच्छी है ललित हैं। हिन्दी जगत इस वरिष्ठ कवि से इस ललित कविता-संग्रह के साथ ही साथ सार्थक कविता संग्रह की आकांक्षा भी रखता है। सामाजिक सरोकारों की कविताओं का एक दूसरा संग्रह भी प्रकाश पा सके, यह जनआकांक्षा है। इस संग्रह का कवि निरन्तर रचना क्रम में रत रहे, यह मेरी आकांक्षा है।

डॉ० विमल

उपाध्यक्ष

जनवादी लेखक सघ, राजस्थान

अनुक्रम

चुप क्यों हो कोई बात करो	1
पता नहीं क्या मुझे हो रहा	3
तुम्हारी ऊँचाइयाँ नापता	5
सदा निराश होने के लिये	7
विकलता तुम्हारी	9
बिन कुछ भी बहे	10
तुम घर में नहीं हो	12
नेह राग	14
मैं प्यार कर रहा कब से तुम्हें	15
हाइकू-1	16
सोचो	17
हाइकू-2	18
तुमने जाने क्या कर दिया	19
हर प्रीत जिसे चाहा मैंने	20
हाइकू-3	21
हाइकू-4	22
हाइकू-5	23
धीर मैं तुम्हें प्यार करता हूँ	24
तुम्हें याद करता पाता हूँ	26
हाइकू-6	27
कल ऐसा न हो	28
दूध मुँहे सा	30
मेरा नशा	31
लिखने से पहले हंसगीत	34

बगन्त वा मिलते रहने	36
घ गूठे की घाप लिय	38
शने: शने. में प्यार हुआ (भाग दूसरा)	41
हाइकू-7	42
मुधि तुम्हारी	43
दश-दश	44
गीत बगाया मैंन सबको	45
सागर मे उठा बवाल	46
मुझे निया है सील	47
तुम्हारे पपु की	48
बमाल भरती हो	49
विषा है तुम्हारा प्रथम	50
जीवन की अन्तिम योगात	51
जट हाता जा रहा हूँ	52
गागर की पीडा को	55
पुन पुन मैं प्यार हुआ	56
करता हूँ मैं प्यार तुम्ह	57
भाव है मेरी	58
नेह स्पन्दन	59
हाइकू-8	60
अधर तुम्हारे	61
नेह कुवेर	62
जगल की रात	63
हाइकू-9	64
तुम जानती हो	65
युद्ध हो चाहे प्यार	66
मतलब की बात	67
मैंने तुम्हारी आवाज को	68
एक दूजे की आसों मे	69
मेरा बधि	70

हाइकू-10	71
हाइकू-11	72
तेरे परस के घेस (भाग तीसरा)	73
तेरे परस के घेस	74
फिनिबम की डीन भरता	75
पूजा के बाँध टूट न जायें	77
विरहा राग	78
तेरी सासो की महक	79
वसन्त मे बरसात	80
मुद्रिका मुषि की	81
बाया की भापा	82
परस की ऋचायें	83

चुप क्यों हो कोई बात करो (भाग पहला)

नाराज तो मैं
सिर्फ इस बात पर हूँ
कि एक से एक नायाब
इतने स्नेहिया के होते हुए
तुमने मुझ पर अचानक
इतना प्यार क्यों बरसा दिया
और अगर ऐसा किया भी
तो मुझ इतना क्या नहीं पूर दिया
कि किसी और के अस्तित्व का
बाध ही शेष न रहे ।

जगदीश गुप्त

चुप क्यों हो कोई बात करो

एक भूकम्प की, छानो को फोट जमीन की
जिद, दूट पड़ने की, घोर बहलाती हुई धरा का
उमे दुलार, पुचरार, बेवसी से थपथपा, पृसला
मुला परिवधा मुलाने का निरन्तर प्रयास—
ठीक वंसा ही, कुछ यैसा ही है सह रही तुम्हारे उर की
धधकती धाग जो दिगती नहीं है।

केवल उसके भभके ही मिजाने हैं मन
हर भभका धन जाता है एक गु फित प्रश्न
जिममे तुम्हागे सीधी सी बातें भी पहेतियाँ लगती है
घोर मारी चेटाये उनका हल ढूढने से डरती हैं
कि वही वो हल "ईडन" का वही सेव तो नहीं फिर
जिमे हो अयिर "ईव" ने "एडम" को भी खिलाया था
घोर तभी उस दर्द का भी जगाया था
जो आज भी तुम्हारे घोर मेरे बीच
मिसकना कराह रहा है, वसमगा रहा है एक अनन्तानन्द की
टेरो कममो के साथ।

सच मानो सच मुझे लगता है डर तुमगे नहीं खुद से ही
जब तुम कहती हो डरता हूँ तुममे मैं—
सच बनाओ क्या डग है फूल महक मे कभी।
घोर फिर तुम डर की बात कर सींच यूँ चीका कर
वहाँ मुझे ले जाओगी डग कर—
तुम तो खुद ढूँढ रही, खुद को ही मुझ मे खोकर !

ये चींक-चींक कर, ठहर-ठहर क्यों पोसती हो
चातक चाह, एक घातक चाह—

मेरे तुरदरे गालो को अपने कोमल गालो से सहलाना !
तौबा कितना सून बहेगा, सोचा है तुमने ?

हाँ ये बात दिगर है कि तुम पहनती हो
वो ही साडी बगाली जो मुझे पसन्द है
और चाहती हो रखना मेरा ध्यान
जैसे चूजे को देती है मा आहार चवा-चवा
जैसे गाती है काई मुग्धा माट
कि तुम आते अच्छे लगते हो, जाते बतई नहीं ।

नही-नही यही कही मिले थे उत्तर मुझे जब लेटे-लेटे ही
गोधूली के लावान में, प्रतीक्षा के वितान में
बुन कर एक एयान्त घना, अघेरे को साधी बना
अलसाये कटकित तन से, स्वप्निल विह्वल मन से
अगडाते तुमने मिलाया था हाथ आबुल अभिसारिका सा
भर पनीले नैनो में चंचल अभिनन्दन !

उस पारद क्षण की बोझिल मादकता में
न जाने कहीं खो गया डूबता-डूबता
कि सब बुद्ध समझते-समझते ना समझ रह गया !
आज भी उसकी सुधि मेरी साँस फुला देती है
नीदें भकभोर, उखाड देती है ।
और आबुल रझाँसा हो जाता हूँ मैं
वेवस !

क्या ऐसा नहीं तुम्हारा दद जिसे जिन्दगी सा ढोती,
उसके अर्थ को खोजती कितने ही ददों में खोती हो
जिसके कारण कभी भी वहाँ नहीं होती हो, जहाँ तुम होती हो
तभी तो जब भी मे तुम्हे देता हूँ आवाज
तुम चौक कहती हो-चुप क्यों हो कोई बात करो !

पता नहीं क्या मुझे हो रहा ?

हो ही रहा था निराश उदास
कि न जाने कौन सी पा ली दीक्षा, करते प्रतीक्षा
कि उम देर भुवहू की शात चहल-पहल मे
गोटिया चटती विफल बोभिल तुम्हारी पदचाप
न जाने कंगे पहचान गया आप ही आप—
होले-होले मूखों कटोली नागफणों मे कमल होता ।

कितनी शकाओं को गोना
उन बेवसी के क्षणों मे बच्चों मा विफल
जब तुम्हारे सामने आया और तुम्हे सामने पाया
तो उस आमने-नामने होने का अर्थ समझ न आया
तब हम एक दूमरे की कदराओं के अधवार मे प्रवेश कर
एक दूमरे मे सोये एक दूमरे को दूढ़ने को तत्पर
कितने घबरा रहे थे तुम्हे याद होगा और ये भी होगा याद
कि मैं चौका था औरचक जब मेरे धधकते परग ने
एक पिघलती हिमशिला की सघन शीतलता मे प्रवेश कर
एक ज्वानामुग्नी को उसकी तन्द्रा से जगा दिया था
और तुम्हारी कोमल वापती बाँहो मे
उसकी धू-धू करती विकराल सपटों मे
स्थय को स्वाह किया था ।

अपनी उस रात में
किसी मसीहा का आशीष सा मिला था
तुम्हारा श्यामल चमकता वाला एक
जिसे छू मैं पूर्ण से पुनः सम्पूर्ण हुआ था ।

इसके उत्सव में जब तुम्हारे पास आया
तो तुम्हें
एक सुदूर स्वप्न की तरह
बहुत दूर खड़े पाया
जिसे देखा तो जा सकता है पर छूना नहीं जा सकता ।

सम्बन्धों की
उस नवीन व्याकरण में
उस दूरत्व की परिभाषा में
घटियों से आई थी कही
विकल तुम्हारी
चंचल आवाज-

पता नहीं क्या मुझे हो रहा
भस्म हो जाऊंगी
अगर जरा भी
पास जो आई
तनिक तुम्हारे ।

तुम्हारी ऊचाइयां नापता

तुम्हारे अनुराग में अभिशापित
तुम्हारी प्रार्थनाओं से निष्कासित
ठिठुरती पहाड़ों की रात में
दरों की माय साय में
मैं प्रतीक्षारत रहा
एक भीर सूरज के उगने तक
महानाता तुम्हारे दिये
वे मय घाव
जो दू टते रहे
फूल में, पत्तों में
महक में, सपनों में
वो मय परस्
तुम्हारी दीठ के
तुम्हारे लवों के
तुम्हारी साँसों के
तुम्हारी बाँहों के
जिनके आधार पर
गीत रूप ने ही रहा था कि. . . .

मेरे मुख को सवने बाँटा
पर दुःख को कौधा तुमने दिया
हर धूप में छाया बन बैठी
मेरी पीड़ा को मेरे साथ जिया

कि . बि . कि फिर तभी
 एक और साय-साय चीपती दौड पडी
 झीनती मुझसे भ्रुण उस गीत का
 जिसमे सच था हमारी प्रीत का
 हमारे हधिर से रची अल्पना जिसकी
 अभी सूखी भी नही थी
 कि एक और हत्या की
 तैयारियाँ जैसे शुट हो गई थी

और मैं ठिठुरता
 ठिठुरती पहाडियो की रात में
 दरों की साय-साय में
 प्रतीक्षारत रहा
 एक और सूरज के उगने तक
 निज को
 तिल-तिल विखरने से सँभालता
 तुम्हारी गहराइयो में डूबता
 तुम्हारी ऊचाइयाँ नापता ।

सदा निराश होने के लिये

तुम्हारे जाने का समय
घने घने धाता रहा
जैमे-जैमे निपट
ध्याबुलता मेरी
होती रही अमल
स्थिति हो गई ऐसी विषट
हर घनघनाहट पर फोन की
विद्युत मा हाथ चढता
मदा निराश होने के लिये
कि हर बार वो फोन
तुम्हारा ही नहीं होता ।

तुम क्या सांच सबती हो
क्या हो रही थी हालत मेरी
कि एक अयुक्त ग्रीडा
व्यक्त नहीं करने दे रही थी
तुममे विद्युत् के पीडा

और मैं रो भी नहीं सका था
ये जानते हुए भी
कि छुट रहा है मेरा
सब कुछ—
जीवन
सपने
धाती ।

उफ्
तुम जाते जाते
एक वार
सिर्फ एक वार
बस आ जाती
या फोन पर
कम से कम
चिंदा ही कह जाती ।

विकलता तुम्हारी

फोन गगते ही
तुमसे
यात
करने के बाद
फिर बजी
घनघनाती
वेचैन मां
फोन की घटी
आर मेरे "हैलो" पर
हौले से
आया था तरता
नन्हा मा
एक उच्छाम्
गीतमय
मादक प्रीत मे
आत प्रीत
जिमकी
श्रुति
यापती
छुपा न सकी थी
विकलता तुम्हारी
मीन ।

बिन कुछ भी कहे

तुम्हारे जाने के बाद
सिर्फ एक ही काम
मैंने निष्ठा से किया है
तुम्हारे पत्रों को
बार-बार पढ़ा है ।

एक बात
तुम्हें शायद
हो याद
फिर भी उसे
दोहरा रहा हूँ
यहा कि
तुमने लिखा था
ये भी कही कि
इतना मे जरूर जानती हूँ
कि मैंने आपसे
इतना प्यार क्यों किया
वस फर्क इतना ही है
आपमे मुझमे कि
आप बयान कर सकते है
और मैं नहीं ।

क्या ये सच है ?
नहीं, नहीं, कतई नहीं ।

जहाँ तुम
एक परम मे
एक दीठ मे
एक मुस्मान में
कितना कुछ
बह गई ।

आद्रेँ आंगे ले
निदान बिल
गदं होती
जदं देह मे
कितनी पीडा
सह गई,
मुँदी पनको के
म्वनिल गागर मे
मुक्त मरुव सा
बह गई ।

अर्थान्
कितना कुछ वह कर
कितना कुछ सह कर
कितना कुछ भी बहे
कितना कुछ वह गई
कि मेरी भाषा
सदा की तरह
एक बार फिर
कितनी अधूरी
कितनी पंगु रह गई ।

तुम घर में नहीं हो

कितने ही कारणों से
कितनी ही बार
तुम्हारे कमरे में गया हूँ
हार, लाचार
भली प्रकार जानते हुए
कि तुम घर में नहीं हो
कभी की चली गई हो।

कितनी ही बार
कमरे के
निपट अकेलेपन के
बीचों बीच हो खड़े
उस उदासी को भोगा है
तुम्हारी कमी के दर्द को
किस विचणता से सहा है
और हर बार
अपने आप से कहा है
कि अब कभी नहीं
तुम्हारे सून कमरे में
उसके उदास अकेलेपन में
तुम्हें ढूँढने
कभी नहीं जाऊँगा

स्वयं को धीर नही मताऊंगा
 धीर फिर हाँ धीर फिर
 सारे प्रश्नों के बाद
 किन्तु हो अधीर
 फिर, फिर
 पाता हूँ स्वयं को
 तुम्हें दूँदता
 भनी प्रकार जानते हुए
 कि तुम घर में नहीं हो
 कभी की चली गई हो
 शायद
 ये भी एक तरीका है
 तुम्हारे मास्त्रिध्य को
 जीने का ।

नेह राग

एक राग रचें हम प्यार-प्यार
जिसकी ईक्षा हो प्यार-प्यार
गत का आरोह हो प्यार-प्यार
गत का अवरोह हो प्यार-प्यार

प्यार अलाप हो गमक प्यार हो
यादो की हो मीड प्यार
तान-तान हो प्यार-प्यार
जोड़ प्यार हो झाला प्यार

काल प्यार हो ताल प्यार हो
हर मौसम हो प्यार-प्यार
बाँसी वीणा सरोद सितार
जो भी हो प्यार-प्यार

भकारो मे हो प्यार-प्यार
पलटे खटके सब प्यार-प्यार
हर मुखड़ा बस प्यार-प्यार
हर सभ हो केवल प्यार-प्यार

मैं प्यार कर रहा कब से तुम्हें ?

रात को चिपटे-चिपटे मोठे
मैं प्यार कर रहा कब से तुम्हें
जगल की ठिठुरती ठिठुरन में
मैं प्यार कर रहा कब से तुम्हें

शैला के पत्थर मग्राटो में
मैं प्यार कर रहा कब से तुम्हें
सड़को के निजन घायल करता
मैं प्यार कर रहा कब से तुम्हें

ददों का घोटता दम हर पन
मैं प्यार कर रहा कब से तुम्हें
गीता की बाहा में बाह डाग
मैं प्यार कर रहा कब से तुम्हें

चाद पे लिग निख नाम तेरा
मैं प्यार कर रहा कब से तुम्हें
सिखा हवा की नाम तेरा
मैं प्यार कर रहा कब से तुम्हें

तन्हाई की आग में जलता
मैं प्यार कर रहा कब से तुम्हें
तेरे उत्सव के सपने सजा
मैं प्यार कर रहा कब से तुम्हें

हाइकू - 1

मालकीस मे वहता सितार
भीगे नैनो मे तुम्हारे
तेरता प्यार

सोचो

मोचो

मैं तुम्हारे ललाट पर अधरो मे
मूरज उगा रहा
और तुम उमे चाद बना
अपनी आँखो मे भूँद, छुपा
गती को रूपहला बना रही ।

माचा

मैं अपन जगज ते ज्वालामुखी
तुम्हारी गामा मे भर रहा
और तुम उन्हे गीत बना
अपन कोमल अधरो मे लगा
राना का मधुर उना रही ।

नाचो

मैं अग्नि परस में तुम्हारे सीमत मे
ऊषा की लाली भर रहा
और तुम उमे गुनाय बन बना
अपने अग-अग म गिना
रातो को महका सजा रही ।

हाइकू - 2

मेरा खून तुम्हारा आचल
नीलाभ निशा मे
गुलाबो का लास ।

तुमने जाने क्या कर दिया

एक राजकुमारी ने
गुक्कुरमुत्ते के छत्ते के
नीचे छिपे
एक मेंढक को
जब नूमा
तो वो राजकुमार बन गया ।

चाद के हँसिये को
बूद पार कर
जब एक खरगोश
एक गुरवाला के
आंचल में छिपा
तो वो देवता बन गया ।

मेरे साथ
तुमने जाने क्या कर दिया
कि आह्लादित्
सोफिया की नन् प्रेक्षती है सदा
में सोलह वर्ष का किशोर
कैसे बन गया ?

हर प्रीत जिसे चाहा मैंने

हर प्रीत जिसे चाहा मैंने
वो रूप तेरा ले के आई,
हर चित्र जो सपनों में उभरा
सब में तेरी छवि सुधराई ।

कविताओं की कोमलता में
तेरी कोमलता शर्माई,
गजले अपनों मादकता में
तेरी मादकता भर लाई ।

सूनी साँझें सूनी रातें
तडपी ले तेरी तन्हाई
रहे पूछते दिन आकुल
कैसे ये जान पै वन आई ?

क्या तेरी मजुल खामोशी में
पडता है मेरा मौन सुनाई ।
गर सच है तो फिर क्यों मेरी
प्रतिध्वनि तन्हा सी लौट आई ?

वाक्पटु अधरो की मुस्काँ,
वाचाल है तेरी अगडाई,
नेह व्याकरण आँखों में पूर
फिर क्यों न तेरी पाती आई ?

हाइकू 3

दो दुश्मन
बैठे हैं साथ
मेरी नींद तुम्हारी याद ।

हाइकू 4

नींद से बोभिल ग्रंथ
प्रवाजी हसो के
श्रान्त पास ।

हाइकू 5

बाहर हवा शांत
भीतर सम्राटा
किमने किसका दर्द बाटा ।

और मैं तुम्हें प्यार करता हूँ

भोर की सोनाली विरण ओस में डूब जाती है
तुम्हारी बनाई चाय चुश्नियाँ जगाती है
और मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।

ढाक के वना में विरण चिलचिलाती है
तुम्हारी आखे मेरी दीठ छीन ले जाती है
और मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।

तितलियाँ गुलाबा पर बेचैन फडफडाती हैं
मेरी धडकन तुम्हारे अधरावन में कसमसाती है
और मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।

कल भूल से कमल वाहा में भर लिये
तुम्हारे उर की चिड़िया सी कोमलता गुदगुदाती है
और मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।

वन प्रान्तर में वनफूल खिलखिलाते हैं
जगल के बौने-बौने से तुम्हारी आवाज आती है
और मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।

पहाड़ी राहों में बफीली हवायें मुझे जकड़ती हैं
तुम्हारे पाशों के सूरज मुझे बांहों में भर लेते हैं
और मैं तुम्हें प्यार करता हूँ ।

फार "हाइ वे" पर हवा से घातें करती है
तुम्हारा घांचल चश्मे से उलझ जाता है
और मैं तुम्हें प्यार करता हूँ ।

सिहर जाती है सॉक्स के परस में भील
तुम्हारे बालों में पसरी रात भंगड़ाती है
और मैं तुम्हें प्यार करता हूँ ।

तुम्हे याद करता पाता हूँ

जब विधोवन की
सुनता हूँ सातवीं सिम्फनी,
जब यहूदी मेनुहिन और रविशकर की
सुनता हूँ जु गल-वन्दी,
जब गोगा की देखता हूँ छवि
आम के साथ औरतो की,
जब जगजीत की आवाज में
गजल होती है, बशीर वदर की,
जब "हार्ट अटैक" के मरीज को
मौत के मुँह से बचाने को लडता हूँ लडाईं,
जब जहा के लिये निकल स्कूटर पर
बहा न पहुँच
उससे भी आगे कही और निकल जाता हूँ,
और जब बुढ़ और गाने की सोच
कुछ और गाता हूँ
कि यहाँ तक कि
"हेडली चेज" भी पढ नहीं पाता हूँ
सपने सजाने के बावजूद भी
नीदो में खो नहीं पाता हूँ
अर्थात् बहुत कुछ करने की सोच
जब कुछ भी नहीं कर पाता हूँ
तब मैं स्वयं को
तुम्हे याद करता पाता हूँ ।

हाइकू 6

नीद में ग्रामुघों से
तकिया भोगा
प्यार मे इतना दर्द कयो ?

कल ऐसा न हो

तुम आई
अदीक्षित, स्वैच्छिक
देहरी पर
मेरे अंतःकरण के
एकान्त मे
विन परवाह किये
उस तूफान की
जो रातों के अधकार में
हमे डराता रहा
धमकाता रहा ।

आओ
आओ
यहाँ
पास बैठ जाओ
मेरे सीने पर
सर अपना धर
मेरी बातें सुनती जाओ
वो बातें जिनमे कितना कुछ
छुपा हुआ है मेरा कितना अवूझ
उन सारी कहानियों का

जिनमें है मेरे
 सुप्त, दुःख और उद्वेग
 जिनमें हैं मेरे
 करुण विपाद
 तिक्त गुण्ठा
 बच्चों सी कल्पनाएँ
 और न जाने कितने
 स्वप्न ।

मैं जानता हूँ
 तुम सुनोगी
 चुप ध्यानमग्न श्रद्धा से
 एक आश्चर्यजनक डाह ले
 जगमगाती प्रणमा मे
 चिन्चिन्ताती महानुभूति मग ।

बल ऐसा न हो
 कि यूँ स्वयं को
 कर अनावृत्त, अरक्षित
 मामने तुम्हारे
 करता रहें पृणा
 तुमसे, खुद से
 और उरा दाएँ मे
 जब सहज कह दूँगा
 तुम से सब कुछ
 जो कह न सका मैं
 कभी खुद से ।

दूध मुँहे सा

दूध मुँहे सा
प्यार

हमारा-

निपल चवाते

चूसते, पीते

बहाई

दूध सग

रक्त की

धारा ।

मेरा नशा

मैं एक सम्मोह के शिकार में हूँ
बान मेरे चिपके है फोन में
(बाम्बू में जो खराब भी हो सकता है)
और मैं उनके धनधनाने की प्रतीक्षा में हूँ ।

मैं तुम्हारी काया को करता हूँ जल्पना
मेरे अधरों पर रची तुम्हारे अधरों की जल्पना
और स्पष्टहर बन अभिलाषाओं का
गुनता हूँ शकाओं की जल्पना
और ममभ नहीं पाता हूँ कि
क्या है बदतरीन
इच्छा या प्रतिइच्छा !

दोनों ही मुझे तवाह कर रहे
स्वाह कर रहे राग कर रहे
और मैं इसका उत्सव मनाता
इस उत्सवपर्व में विस्मित सोच रहा
कि क्या हो सकती है कोई
इससे भी कृदिल निता—

ये ही मेरी
 सनक है,
 ये ही मेरी
 विवशता,
 ये ही है
 मेरा नशा !

कोई नहीं समझेगा इसे कोई नहीं
 औरों की तो बात ही क्या
 तुम भी नहीं और मैं भी नहीं
 कि
 कैसी ये सनक
 कैसी ये विवशता
 कैसा ये
 नशा !

या प्रीत के हाथो ये समर्पण कैसा
 केवल उसके
 जो शहीद हुआ
 इसकी लपटा में धू-धू जल
 जिसके अग अग तडके, मुलसे
 पर पल को भी ना हुआ विकल ।

वित्तनो के ही पास नहीं है साधन वो
 भोगे सुख इस आग को जो
 मेरी बात और है
 क्या कि मेरे सपनों में है
 सहज, सरल बोमलता वो
 कि जल मजूँ सहज इसकी लपटा में

पर फिर भी है विडम्बना कैंसी
 मेरे जाग मे
 मैं सफ़्त हूँ
 सरत हूँ
 कितना सजग हूँ
 कि यही असुरक्षित करते हैं मुझे
 कि तभी तो जितना होता हूँ बठोर
 उतना ही द्रवित कर जाता है
 वो परस ध्यान
 जिसने मम् जीवन
 महक बना कर
 भर रखा है
 निज पोर पोर की
 मुट्ठी में !

लिखने से पहले हसगीत

घात दया करने की नहीं
ना ही दया कराने की है
मैं इतना महान् नहीं हूँ
कि किसी पर दया कर सकूँ
ना ही इतना दीन हूँ
कि कोई दया करे मुझ पर
नहीं, हम तक नहीं करेगे इस पर ।

सम्बन्ध हमारा
शर्तों की बेसाखियों के
लचर आश्रित
आधार पर नहीं है
ये तो हमने
समर्पित किया है
पूजा के फूल-सा
एक दूजे को
झीर बन गये है नैवेद्य
उस पूजा के
हम दोनों ही ।

ये तो भ्रम माह्लाद है
उस पूजा से पाये भ्रमयदान का
कि निर्भोक मागता हूँ तुमसे
वो सब जो खुद को भी तुमने
न कभी दिया न खुद से लिया ।

भयभीत विकल अनवरत
मैं हूँ प्रतीक्षारत
प्रार्थना के गीत में
बधा तुम्हारे हीन में
कि कभी तुम अपरिचित बन
पूछ बैठो न मुझमें
हूँ कौन मैं ।

हमारे प्यार का यूँ
कभी भी कैसा भी
वही भी कोई भी
लिखने से पहले हंसगीत
तुम ये अवश्य निभाना रीत
कि कर देना मेरा वध
अपने हाथों से
क्योंकि
मुन न पायेंगे वो हंसगीत
मेरे कान,
मह न पायेंगे उस गीत का दर्द
मेरे प्राण,
मेरी आत्मा को फिर न मिलेगा
कोई प्राण ।

वसत वन मिलते रहेगे

अपनी अपनी वगले भाकते एक दूसरे का मर्प आकते
जब हम हगे अधिर वो पल आयेगा एक वार फिर
जब हम आकुल भिभकते लिये दो दिल तडपते वेचैन धडकते
एक दूसरे के सामने एक वार हगे फिर
कितना कुछ कहने की सोच
कुछ न कह पाने की विवशता ढोये
एक दूसरे के सामने
एक दूसरे से दूर
एक दूसरे मे खोये
ये सोचते कि कैसे कहे
उन सपनो के वारे मे
राते जिन्होने
परियो का देश बना दी,
कैसे कहे
उस दर्द के वारे मे
जिसने
हर पोडा सहनी सिखा दी
कैसे कहे
उस विकलता के वारे मे
जिसने
हर वेचैनी गीण बना दी
कैसे कहे
उस गीत के वारे मे
जिसने
भूली रागे याद दिला दी ।

और यूँ सोचते गुद की बेवसी को कचोटते
 एक दूसरे को ध्याबुल ताकते एक दूसरे का मर्पं भ्रांकाते
 अपनी अपनी धगलें भावते
 कुछ कह न पाने की विषयता ढीये
 एक दूसरे के सामने एक दूसरे से दूर
 एक दूसरे में मीये
 मौन हम
 कहते रहेंगे
 मुनते रहेंगे
 बिन कुछ कहे
 बिन कुछ मुने
 उस ठण्डी भाग में जलते
 भिन्नते रहेंगे
 मिलते रहेंगे
 ददं
 कितने देंगे
 ददं
 कितने लेंगे
 एक दूसरे के पतझड में
 वसत वन मिलते रहेंगे ।

अंगूठे की छाप लिये

तुमने बताया था कि एक कहानी थी
प्रीत भरी आस की टीस भरी
जिसमें दो पात्र थे
एक का नाम था तुम्हारा, एक का नाम था मेरा
और अपनी-अपनी उलझनों के साथ
हम उस कहानी को जी रहे थे
प्रीत की एक आदि पीडा साग्रह विकल पी रहे थे
जैसे चट्टाने हर वर्षा में प्यासी पीती है पानी
तुमने बताई थी कुछ ऐसी ही कहानी
प्रीत की आस की टीस भरी
जिसमें दो पात्र थे
एक का नाम था तुम्हारा, एक का नाम था मेरा ।

उस कहानी के दर्द में खोया मैं डूबता रहा हूँ तुम्हें
कितना आकुल मन ले मैं डूबता रहा हूँ तुम्हें
आम्र कुंजों में नहीं
कदम्ब की छाया में नहीं
कजली की काया में नहीं
वृन्दावन की गीत गोविन्दीय
माया में नहीं
मैं डूबता रहा हूँ तुम्हें
सुधि की सूनी लम्बी सड़कों पर भटकता
उन दिनों में जब तुमने मेरी ममतामय सेवा की थी
कितनी बातें की थी वहाँ

यहाँ की, वहाँ की मारे जहाँ की
 और उन क्षणों में
 जब हम
 एक दूसरे की हथेलियाँ थामे
 भाँवते रहते थे एक दूसरे की छांगों में बच्चों से
 हाँ, वहाँ
 कितना आकुल मैं कूँटता रहा हूँ तुम्हें
 उस कहानी से तुम्हें बाहर निकाल
 ले चलने को आकुल अपने माथ-माथ
 एक नई कहानी लिखने
 जिसमें होंगे तो हम दोनों ही
 पर उसे पढ़ेगा कोई और नहीं
 हम दोनों के सिवाय ।

ये नई कहानी कैसे आरम्भ की जाये ?
 एक बार तो लगता है तुम मेरी सहोदर हो
 और उस मुन्दर विचार में तो
 मैं इसके गुदगुदे नेह में डूब जाता हूँ
 और स्वप्निल आँसू खोलता हूँ तो पाता हूँ
 कि कहानी तो आरम्भ ही नहीं हुई
 तो अगड़ाता एक बार फिर आगे बढ़ जाता हूँ
 और तब एक बार लगता है तुम मेरा गन्तव्य हो
 और मैं तुम तक पहुँच पुनः सो जाता हूँ
 तुम में खो जाता हूँ
 और कहानी आरम्भ होने से पूर्व
 न जाने कहाँ ठिठक रुक जाती है
 और तब कई बार यूँ लगता है
 कि तुम अचानक कितनी कठोर हो गई हो
 कि मैं अकेला हतप्रभ अपने घाव सहलाता हूँ

स्वयं से पूछता जाता हूँ
 कि मैं ये कहानी क्यों लिखना चाहता हूँ ?
 और क्यों चाहता हूँ कि
 तुम ही उसमें मेरी एक मात्र सखा रहो ?
 जिसके हृदय पर निज रक्त से अपने अँगूठे को भिगो
 अपनी पहचान छाप दूँ
 जिसके बाद तुम कभी
 छुप न सको मुझसे कभी
 क्योंकि अँगूठे की छाप किसी की भी
 छुपाने से छुपती नहीं
 फिर तुम चाहे किसी की भी होकर चाहे रहो कहीं-
 हर किरण
 हर महक
 हर आवाज
 जान जायेगी
 कि मैं किसका हूँ और तुम किसकी
 इसलिये अब तुम छोड़ दो होना विकल, उदास
 त्याग ये आस
 सोच सोच न हो निराश कि

किस किस से जोड़ कर नाम तुम्हारा
 कितनी ने तुम्हें है कितना सताया ।

अब तो हमें ये कहानी लिखनी है
 जिसमें केवल हम तुम होंगे
 एक दूसरे के हृदय पर
 एक दूसरे के रक्त से भीगे
 अँगूठे की छाप लिये ।

शनैः शनैः में प्यार हुआ
(भाग दूसरा)

में विचार नहीं प्रेम हो गया हूँ
समूचा किसी समूचे में खो गया हूँ।

भयानी प्रसाद मिश्र

हाइकू 7

खड़ी करतल से निज मय ढाँपे
न जाने क्या तुम देख रही
दर्पण में विकल सिहरती ।

सुधि तुम्हारी

सुधि तुम्हारी

विमनी न्यारी

तन मे

भर गई

तुम्हारी

महक की

सुमारी ।

•

दश-दश

दश-दश
नख दत दश-
जुन्हाई मे
भील गदराई
लिये नीलोत्पल
लोहित नील ।

गीत बनाया मैंने सबको

नगर के बहानी कोलाहल को
कॉनफ़ेन्स की भोटी चित्तियों को

“विशाला” की ग्राम्य शाय को
“कामा” के बरमो पास्ता को

काँफ़रिया की सौम्य परिक्रमा को
गलियों की पागल चहल पहल को

तुम्हारे प्यार की वर्णमाला में पिरो
गीत बनाया मैंने सब को ।

सागर मे उठा बवाल

कोमल कोमल
मखमल मखमल
सूखे हुए शैवाल
छूए जब भी लहरो ने
रूपा सिकता पर
सागर मे उठा बवाल ।

मुझे लिया है लील

मूरज को
 निगलने के पहले
 सागर ने
 रग बदले
 लाल, पीत और नील
 मेरे एक परस पर जैसे
 रग बदल कर तुमने जैसे
 मुझे लिया है लील ।

तुम्हारे वपु की

जब जब छुआ
सिकता की बालू को
तब-तब पायी
परस-परस पर
तुम्हारे वपु की
कोमलता
गोलाइयाँ
और सघनता
तभी तो
लौट लौट कर
आता है सागर
सिकता पर ।

कमाल करती हो

बात भी करती हो
तो करती हो
मेरी भाँसों की
कमाल करती हो—
अरे !

ये तो
वो तो
देसती ही है
दिखता है जो
पर वो भी
जो
दिखता नहीं
जैसे
मेरे लिये
तुम्हारी चाह
प्यार की वो
सागर-सी थाह ।

खिंचा है तुम्हारा अक्स

सागर से तारों तक
तारों से सागर तक
क्षितिज पर
खिंचा है तुम्हारा अक्स
सागर का
उन्माद लिये
तारों की झिलमिलाहट लिये
क्षितिज-सी फँसी
अकुलाहट लिये ।

जीवन की अन्तिम सीगात

सागर का
कोलाहल हो,
सिक्ता पर
भिलमिल
नीरव रात हो
तब कुछ और हो
तो जम्र इतना हो
कि बस टहलता
तेरा साथ हो
जीवन की बस वो ही
मुन्दर अन्तिम
सीगात हो
और फिर कुछ भी न हो
साँस भी न हो ।

जड होता जा रहा हूँ

न मेरा कमरा है
न टेलीफोन का बूथ कोई
ये तो है पूरा का पूरा
टेलीफोन एक्सचेंज ही
जिसमें मैं बन्द हूँ
जो खुद बंद है।
“स्पेस शटल” की ओली में
और “शटल” उडा जा रहा है
न जाने
किम आकाश गंगा की ओर
और एक्सचेंज के ओर-छोर
घटिया आकुल घनघना रही हैं
पर बेचैन उतावली हलो-हलो पर
न कोई आवाज जा रही है
बस घटियाँ आकुल घनघना रही हैं

न कोई लाइन घा रही है
न कोई लाइन जा रही है ।

सारे के सारे
नम्बर हमारे
एक दूसरे के पास हैं जबकि
घोर हैं पूरे के पूरे सही के सही
फिर भी लाइन सारी की सारी
जमीन के ऊपर तारों की
जमीन के नीचे बँवलों की
समुद्र तलो पर फाइब्रोऑप्टिक बॉटों की
माइक्रोवेव की तरंगों की
या तरंगों की "सैटलाइट" की
अर्थात्
अपने अपने सारे ढगों की
लाइनें सारी की सारी
आयुल धनधनाती हैं
पर न कोई आवाज आती है
न कोई आवाज जाती है
और मैं
तुम्हारी ही नहीं
अपनी कारा में भी बन्द
चीखता हूँ चिल्लाता हूँ
हलो-हलो ।
पर किसी की कोई आवाज
सुनाई पडती नहीं
केवल एक सप्ताटे के
जो दिन प्रतिदिन
पल प्रति-पल

होता गया है
 घन से सघन
 और मेरी चीखती हलो हलो
 लिये ज़हन
 भूकम्प सा कापता
 प्रतीक्षारत है
 एक भयानक "क़ैश" की
 विभीषिका की—

सकते मे श्रान्त, क्लान्त
 हत्प्रभ आक्रान्त
 सोच भी नहीं पा रहा कि
 फोन उठायें
 या न उठायें
 कि
 नम्बर मिलायें
 या न मिलाये
 जबकि घटियां आकुल घनघना रही है
 वन्द खिडकियों के
 वन्द दरवाजो के
 काँच
 कँपकँपा रही है
 अनवरत्
 और मैं तुम्हारी सुधि के
 आँकटाँपस पाशो में जकड़ा
 जड़ होता जा रहा हूँ
 परत-परत ।

सागर की पीछा की

अभि रहा हो
या रहा हो अल
कौन हुआ
सागर की
पीछा के लिये
विकल—
विष पीया तो
शतार्ची बन गये
पीया अमृत तो
देव बन गये
विलाम ही समझा
मचने
मन्यन की पीछा की
कोई भी तो न समझा
सागर की पीछा की ।

शुनःशुनः मैं प्यार हुआ

सागर की
वातास को जब जब
सासो मे भर भर जीया
फिर फिर तेरी सांसों को
आह्लादित आकुल पीया ।

सागर तट पर
डाब का जब जल
तृपित लबो ने जब पीया
तेरे लबो की मदिर मधुरता
आह्लादित आकुल जीया ।

मछुआरो की
वस्ती के पास
लहरो मे उछली मीन के
अवसो को जब जब देखा
तेरे नैनो की चचलता को
आह्लादित आकुल भेला ।

केलो के खेतो मे
फदलीतरु को
जब जब छुआ
तेरे वूषु की पाई स्निग्धता
शुनःशुनः मैं प्यार हुआ ।

करता हूँ मैं प्यार तुम्हें

करता हूँ मैं प्यार तुम्हें
जैसे पानी धूप को
करता हूँ मैं प्यार तुम्हें
जैसे शिशु दूध को ।

करता हूँ मैं प्यार तुम्हें
जैसे जंगल हवा को
करता हूँ मैं प्यार तुम्हें
जैसे ददं दवा को ।

करता हूँ मैं प्यार तुम्हें
जैसे तितली पराग को
करता हूँ मैं प्यार तुम्हें
जैसे शलभ आग को ।

करता हूँ मैं प्यार तुम्हें
जैसे शेर आजादी को
करता हूँ मैं प्यार तुम्हें
जैसे बच्चा आवादी को ।

आँख है मेरी

आँख है मेरी
जगल के गाइड-सी
जो देखती है
सुदूर किसी टहनी पर
बैठे वाज को
फैली छायाओं में
भाड़ियों के भुण्ड में
विचरते हिरणों को
दूर किसी सोते पर
बैठे केसरी की आँखों में
चिलाचिल करती किरणों को
ऐसे ही पकड़ लेता हूँ
तुम्हारे आनन पर
आते-जाते
हर स्निग्ध भाव को
तुम क्यों लुकाने की
करती हो कोशिशें
मुझसे यूँ ?

नेह स्पन्दन

जब जब
मैंने पाया
स्वयं को
तेरो बाहो मे
लगा मुझे
खोया हूँ अबेला
गिर जगल की
राहो मे
जहा निजन मे
कितना जीवन
कितने सुखद
भय के रोचक छन
नीरवता मे
नेह स्पन्दन ।

हाइकू 8

शैली में अभय जंगल
तुम्हारे साशों में
मेरा मंगल ।

अधर तुम्हारे

लोट लोट कर

गया हूँ

बाड़ी में नारियल की

बिन प्यास भी

नारियल पीने

बयोगि

पास नहीं थे

अधर तुम्हारे ।

नेह कुवेर

मन को लूटा
तन को लूटा
रात और दिन
हर क्षण को लूटा
कैसा तुमने
तिल-तिल मुझको
जहाँ तहाँ
कितना लूटा ?
मैं
नेह कुवेर
बन बैठा
बैठा-बैठा ।

जंगल की रात

जंगल की रात
सकड़ों की आग
साथ बैठे प्रामीण की
जंगल की
कितनी ही बात
जो कितनी ही
अब नहीं याद
क्योंकि
लिये थी
अचियाँ साथ-साथ
तुम्हारी याद की
गुनगुनाहट
कि आग का ताप
दूगुन हो गया
आप ही आप ।

हाइकू 9

इधर मैं सो नहीं रहा
क्योंकि उधर तुम
जाग रही हो ।

पृष्ठ ३ रोड. बीकानेर

तुम जानती हो

तुम जानती हो,
कि मैं तुम्हें
इन्तहा प्यार करता हूँ
इसमें न कोई शर्त है
न कोई पतं है
जिनमें कुछ छुपा हो ।

मैं तुम्हारे सामने
एक खुली किताब हूँ
तुम जहाँ चाहो जैसे चाहो
मुझे पढ़ लो ।
मैं तुम्हारे प्यार में तपा
बहता लावा हूँ
तुम जैसे चाहो जैसा चाहो
मुझे गढ़ लो ।

युद्ध हो चाहे प्यार

तुम्हारा प्यार
यादें दे दे मुझे
रहा है
सपने निखार
और मैं
सब कुछ जीत
पूर्णत
स्वय को हार
विजयी सेनानी-सा
एकाकी
नीख निशा मे
सोच रहा—
अब क्या ?

मानो
युद्ध हो या प्यार
प्रत्यावर्तन दोनो मे ही
असम्भव कष्टकर होता है ।

मतलब की बात

तुम्हारे लिये
मेरे प्यार में
यह बात
कोई मतलब
रखती ही नहीं
कि मैं तुम्हें
भोग सकता हूँ
कि नहीं—
मैं तो
इस स्थिति से
बहुत आगे निकल गया हूँ
मैं तो
तुम्हें
हर पल जीने लग गया हूँ ।

मैंने तुम्हारी आवाज को

मुझे
तुमने
जब भी
जहाँ भी
पुकारा है
मैंने
तुम्हारी
आवाज को
ठहर
सम्भल
तसल्ली से
तल्लीन हो
जी भर कर
कितना
निहारा है ?

एक दूजे की आँखों में

मैं

सिंह की

तसल्ली के साथ

किस तित्तता में

प्रतीक्षा कर रहा हूँ

उस क्षण की

जब

मेरी आँखों में

तुम होगी

और तुम्हारी आँखों में

मैं ।

मेरा कवि

धीरे-धीरे
उदय हो रहा
दूर क्षितिज पर
पुन रवि

धीरे-धीरे
जगने लगी है
अकुलाती
अनजान अवि

न जाने
क्या चाहता है
मुझसे मेरा 'मैं'
और उसमें आकुल
मेरा कवि ?

हाइकू 10

पाशो मे तुम्हारा खिलखिलाना
स्यम्निल हंसो
नीदो मे बच्ची थी ।

हाइकू 11

सागर मे नीम प्रशान्ति है
उर मे है कोलाहल ।

तेरे परस के ब्रँल (भाग तीसरा)

अब तक जिन्दगी मे जो कुछ था, जो कुछ है
सहपं स्वीकारा है
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हे प्यारा है ।

गजानन माधव मुक्तिबोध

तेरे परस के ब्रेल

तेरी हर थाती
सम्भाले हुए
जीवन की
पूर्ण पूजा लिये
तेरे लिये
तेरे परस के
ब्रेल पढता
तुझे याद करता
केवल तेरा तू
में
तुझे याद करता
बनाये वहाना
जीने का
तेरो यादो को
सदा की तरह
जीये जा रहा
तेरे परस के
ब्रेल पढता
तुझे याद करता
केवल तेरा तू
में ।

फीनिक्स की डीन भरता

द्विषा-घघरावनो ने
पिताई है वस्तूरी
रई-सी बाहो मे
उडाई धूप गुनगुनी
कि जी उठा है प्यार
पतझड की ठण्डी
राम मे सोया
फीनिक्स की डीन भरता-
मच नहीं थी खबर
कि लिये होगी यूँ अजर
चिडिया-सी जान
सागर-सी गहराई
अतरिक्ष-सी गु जाइश
जो सोख लेगी निचोड
जीवन का हर एक छोर
मुक्त करती हलाहल से
अनुत्तम नैराश्य के

कि किस कदर
 होता है अनुभव हल्कापन
 ज्यों हट गया हो
 सर से गगन भार
 हाथों में हटी हो
 भूलती धरा
 और सहज द्रुमा हो मोना
 बिना गोलियों के
 हर रात
 बस सालती है
 तो है एक बात
 प्राय
 गुलने के पहले
 नींद की
 टूटती खुमारी में
 न पाना
 तुम्हें पास
 अपने साथ
 टटोलती उँगलियों का,
 जैसे
 खो दिये हों
 लम्बी बेहोशी के बाद
 हाथ ।

पूजा के बाध टूट न जायें

रेगिस्तान की भुनसती
लू-सी निदंयी
हर नये पाद की
किरणें शंशय
घोर जनाती हैं आंगें
जिन्होंने मारि है सौगन्ध
बचाये रगने की
तेरे कमल
जिनके गुलाबी सपने
पांगो में अपने
सृपाये हुए है ये
कि उर में उमड़ता ज्वालामुखी
इन्हे निगल न जाये
विह्वल, विचलित, विरही मन की
पकड़ शिथिल न पड़ जाये
पूजा के बाध टूट न जाये ।

विरहा राग

ये विरहा राग
कब तक कसेगी
मन वीणा के तने तार
तपती सांसो से ही
गूँज उठती है
कैसी झकार
कि कांप उठता है
हर तरफ का तार
किस कदर घबराया
कि अब टूटा हर एक तार
जिसके बाद
केवल रह जायेगा
खोल वीणा का
मरुथल का वीरान ।

तेरी सांसों की महक

महत्व इस बात का नहीं
याद है अभी कि
किस प्रकार तूने छुआ या प्रथम
पर आशुलता इसकी है
कि क्यों जल रही है आग
तेरी यादों की पहाड़ियों की चोटी पर
बताती कि तू नहीं पास
छलती सारे भटके पाखी
कब गे जो ठूँड़ रहे नीड़
बरसाती तूफानों में
टकराते एक दूसरे में
और बढाते कोलाहल
सपनों को रातों में
जहाँ छिपी है कितनी ही
तेरे गेशुओं में उलभी
भोर, रात, गोधूलि
जिनके चौके मौन में
विह्वल-सी भटक रही है
तेरी सांसों की महक
जिसे पकड़ने के लिये मैं
ताकता हूँ औचक
कभी इधर, कभी उधर ।

वसन्त में बरसात

वसन्त मे बरसात
फैलाती आग
मन वन मे
हर वू द साथ
धधक उठती है
अचिर्या और
आकाश लाल हो रहा
भान नही कि
सूर्योदय कि सूर्यास्त
हाथो से छूटती पकड समय की
भटकते वीथियो में
अनन्त व्योम की
खोजते मान सरोवर ।

मुद्रिका मुधि की

राजहस भटवते
गुलाबी सपनो मे
भूलसते
नीली गुफाघो मे
उमडती लहरो मे
हूँ डते
मीन
जिसने निगली
मुद्रिका मुधि की
याद मे जिसकी
हर याद
हूँ ड रही याद की
बुद्ध याद वरने के लिये ।

काया की भाषा

तेरी काया की भाषा की
पढ रहा वर्णमाला
जैसे गिन रहा लहरे
उमडे सागर की
उच्छृङ्खलता से
असयमित उग्र, हिंसक
प्यार करता जो धरा को
और मैं ओढे
मौन तेरा
पीछा करता
तेरे अभाव का
भूल जाऊँ तेरे दिये दर्द
सोच रहा ।

परस की ऋचायें

मेरा नाम ही नहीं
भीर सब कुछ भी
तो ले लिया है तूने
फिर कहाँ
रह जाता है
कंसा भी कोई ज्ञान ?
स्तनपान से लेकर
घ्राज चिन्तन तक का,
जब हर पल मन
रत् मुखस्थ करने में
तेरे परस की ऋचायें
प्रवेश के लिये
तेरे मन्दिर में ।



